ISSN : 2393-9362
वर्ष-दस, अंक-39 जुलाई - सितम्बर 2023

साहित्य सरस्वती

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय,सागर (म.प्र.)

साहित्य सरस्वती

हिन्दी त्रैमासिक

वर्ष - दस, अंक - 39, जुलाई-सितम्बर 2023

प्रधान संपादक

डॉ. सुरेश आचार्य

संपादक

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

उप-संपादक

सरदार पृथ्वीपाल सिंह

प्रो. पुरुषोत्तम सोनी

व्यवस्था एवं परामर्श

- के. के. सिलाकारी, एडवोकेट, अध्यक्ष
- पूर्व सांसद लक्ष्मीनारायण यादव, न्यासी
- डॉ. मीना पिम्पलापुरे, न्यासी
- पं. शुकदेव प्रसाद तिवारी, सचिव

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय सागर की त्रैमासिक पत्रिका

ISSN - 2393-9362
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा अनुमोदित जर्नल नं. 47704
Peer reviewed journal वर्ष - दस, अंक - 39, जुलाई-सितम्बर 2023

विषय विशेषज्ञ समिति

प्रो. सुरेश आचार्य, अवकाश प्राप्त, हिन्दी विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय, डी. लिट्, अध्यापक, हिन्दी विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर

प्रो. रूपा गुप्ता, हिन्दी विभाग,
बर्दवान विश्वविद्यालय, कलकत्ता

डॉ. राजीव रंजन गिरी, हिन्दी विभाग,
राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपर्क - सचिव, श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय ट्रस्ट,
गौर मूर्ति, सागर (म.प्र.)
फोन : 07582-243759, मो. : 9406519191

- **लेखकों के विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।**
- **समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र सागर (म.प्र.) होगा।**
- **सभी पद पूर्णतः निःशुल्क और अवैतनिक हैं।**
- **रचनाओं के लिए किसी भी प्रकार के भुगतान की व्यवस्था नहीं है।**

आवरण
असरार अहमद सागर

अक्षर संयोजन एवं मुद्रण
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, वेस्ट गोरख पार्क, गली नं. 1E
शाहदरा, दिल्ली-110032

सम्पादकीय

चौतरफा

इन दिनों कई विचित्र घटनाएँ हुईं। पाकिस्तान से श्रीमती सीमा हैदर भारत के सचिन मीणा की मुहब्बत में पति का त्याग कर अपने चारों बच्चे बटोर कर भारत आ गईं। सो खैर मकदम है उनका। इधर भारत से अंजू थामस अपने पति को दो बच्चों सहित छोड़कर पाकिस्तान जा पहुँची। वहाँ पहुँचकर उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया और सकल बंधनों से मुक्त होकर श्री नसरुल्लाह से निकाह फटकार दिया। मुझे इन वीरांगनाओं के इन सुकृत्यों से सहसा पुरानी फिल्में याद आने लगीं। 'मुगले आजम' का गाना मय अनारकली की अदाओं सहित उछलने लगा– प्यार किया तो डरना क्या– जब प्यार किया तो डरना क्या! प्यार किया कोई चोरी नहीं की छुप-छुप आहें भरना क्या?– और अनारकली की इस चुनौती से लाल होता अकबर का चेहरा याद आया।

चलो, भारत पाकिस्तान की भीषण दुश्मनी में एक ठंडी लहर चली। भले वह छह बच्चों की दो माताओं ने चलाई हो। और कुछ हुआ हो सो छोड़ें। पर भारत और पाकिस्तान के सद्गृहस्थ सतर्क हो गए हैं। पत्नियों पर नज़र डालकर सोचते हैं। कहीं आधे सफर में बाई किसी के साथ ट्रेन से न उतर जाएँ। भारत और पाकिस्तान में यह जो क्रांति उर्फ मुहब्बत का नया ट्रेंड चला है। इसके व्यापक स्तर पर फैलने की आशंका है। फिर से आदम हव्वा ने वर्जित फल चख लिया है। खुदा खैर करे। यह तो मुहब्बत की चर्चा हुई। अब कुछ मारपीट दंगे-फसाद पर नजर डालिए।

हरियाणा के नूंह में विधिवत फौज की तरह एक धार्मिक शोभायात्रा पर किया गया हमला आश्चर्य, शासन की असफलता और सामाजिक वैमनस्य का परिचय देता है। आखिर योगी माडल अपनाते हुए बुलडोजर का प्रयोग शान्ति स्थापित कर पाया। अभी भी थोड़ी बहुत 'ठूं-ठां' चल रही है। सैकड़ों पत्थरबाज सूरमा गिरफ्तार हुए हैं। कुछ जेल में हैं। कुछ अभी पुलिस से साक्षात कर रहे हैं। आपको यह जान कर अचरज होगा कि साइबर क्राइम का जो गोरख धंधा झारखंड के जामताड़ा में पकड़ा गया था। वैसा ही नूंह में भी चल रहा था। इसे नियंत्रित करने जो साइबर थाना कायम किया गया था। उस पर सबसे तेज हमले हुए और उसकी न केवल बिल्डिंग को क्षति पहुँचाई गई बल्कि उसके सारे चार पहिया वाहन जलाकर राख कर दिए गए। दहशत और खून-खराबे के जो दृश्य टी वी समाचारों से हम तक पहुँचे वे दिल दहलाने वाले हैं। अनेक मकान, मनुष्य, वाहन, संपत्ति को राख कर दिया। यह राष्ट्रीय क्षति है।

इन्हीं दिनों जल-प्लावन जैसी वर्षा हो रही है। जन सामान्य ही कुदरत का भी निशाना है। दैवो दुर्बल घातकः। संस्कृत का एक श्लोक है–

अश्वं नैव, गजं नैव, व्याघ्रं नैव च नैव च।
अजा पुत्रं बलि द्यात देवो दुर्बल घातकः।।

अर्थ घोड़ा नहीं, हाथी नहीं और शेर तो नहीं नहीं। बकरी के बच्चे की बलि दी जाती है। देवता भी दुर्बल को ही मारते हैं। भारतीयता एक बड़ी और सर्वजन सुखाय सर्व जन हिताय वाली सामाजिक चिंता है। सब सुखी हों, सब संपन्न हों। सब मिल-जुलकर रहें। ऊपर चर्चित हमला इसी सोच के विरुद्ध चलाई जाने वाली साजिश का हिस्सा है। देश भर में छिट-पुट देशद्रोहियों की हरकतों पर कठोर नजर और प्रतिक्रिया हमारी राष्ट्रीय राजनीति का हिस्सा होना चाहिए। शठे-शाठ्यम् समाचरेत। अर्थात् दुष्ट के साथ दुष्टता से ही व्यवहार किया जाना चाहिए। भारतीय उदार चिन्तन के खिलाफ खड़े संस्थान ध्वस्त किए जाने चाहिए। फिर चाहे जो हो।

इसकी बहुत जरूरत है। दरअसल भारत एक तरह से एक अलग दुनिया ही है। जब एक हिस्से में शांति

और सुख की मलय समीर बह रही होती है। तभी दूसरे हिस्से में दंगे-फसाद, वैमनस्य और झंझटों की लू-लपट चलने लगती है। अनेक भाषाओं, अनेक विचारधाराओं, अनेक सामाजिक रीति-रिवाजों वाला यह प्यारा देश बहुत मुलायम और महाकठोर है। वज्रादपि कठोराणि मृदुनि कुसुमायते। वज्र से कठोर और पुष्प से मृदुल है। वक्त आने पर जब देश उठ खड़ा होता है तो दुनिया का भूगोल बदल जाता है। जब संसार पर कोरोना जैसा संक्रमण फैलता है तो पूरी दुनिया को वैक्सीन सप्लाई करने वाले भाई की भूमिका निभानेवाला यह महादेश अपनी संस्कारधर्मिता के कारण आज वैश्विक स्तर पर अपने प्रभाव छोड़ रहा है। दुनिया इसे विकसित देश ही मानने लगी है। भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जब विगत दिनों पापुआ न्यूगिनी की यात्रा की तो वहाँ के राष्ट्रप्रमुख ने पैर छूकर उनका सम्मान किया जो पारंपरिक भारतीय संस्कार है।

एक बात अलबत्ता मानना पड़ेगी कि चुनाव आने की आहट पाते ही सारे खिलाड़ियों के कान-पूंछ खड़े हो जाते हैं। इसी आधार पर अपनी-अपनी गोटी फिट करने बड़ी-बड़ी पार्टियों के इब्ने-सिन्ना, अलगज़ाली, अलबरूनी, चंद्रगुप्त और चाणक्य अपने विचार मंथन के द्वारा बताते हैं कि किस हिस्से में कौन सा अस्त्र कारगर होगा। वे तय करते हैं कि देश के किस हिस्से में ठंडी शीतल हवा बहना चाहिए और किस हिस्से में लू-लपट। तदनुसार मौसम तय होता है। वे पर्दे के पीछे रह कर काम करते हैं। 'अदृश्यम्' होता है उनका व्यक्तित्व और 'दृश्यम' होते हैं उनके नतीजे। बड़ा लोकतंत्र है भारत। बड़े-बड़े बजट होते हैं विभिन्न योजनाओं के। उन पर बड़े-बड़े दाँत लगे होते हैं। कुछ दिखते हैं कुछ नहीं दिखते। मगर धन्य है इस महादेश के वोटर को। अनेक प्रचारों, प्रपंचों और पाखंडों के बीच वह मूल सत्य को पहचान लेता है। चुपचाप मतदान करके सबकी हवा निकाल देता है। सारा लोकतांत्रिक तामझाम उसके बूते है। उसकी सोच से है। उसके निर्णय से है। और आश्चर्य वह अपढ़, गरीब, नगण्य ऐसा मजबूत फैसला लेता है कि सारे कूट कौशलकार मुँह बाये खड़े रह जाते हैं।

म.प्र. काँग्रेस के अध्यक्ष श्री कमलनाथ जी के घर बाबा बागेश्वर धाम पहुँचे। घर में क्या खिचड़ी पकी सो तो अल्ला जाने मगर छिंदवाड़ा में बाबा की कथा ने भाजपा के लिए संकट की सीटी बजाई। जागो सोने वालों। भारत का चंद्रयान तीन पृथ्वी की कक्षा छोड़कर चंद्र की कक्षा में प्रवेश कर गया। इस सिलसिले में टीवी चैनलों पर पाकिस्तान के एक बुद्धिजीवी की टिप्पणी याद रखने लायक है। चैनल के एंकर ने जब उससे पूछा कि आप लोग कैसा फील कर रहे हैं। तो उसका उत्तर था– हम इधर अपने परचम पर चाँद लिए बैठे हैं। उधर इंडिया अपना परचम चाँद पर फहराने पहुँच रहा है। इंशाअल्लाह। भई मियाँ क्या दो टूक बात कही है। पाकिस्तानी सरकार की खोपड़ी में खटाक की आवाज के साथ लगी होगी।

मेहनत, लगन, प्रेम, त्याग, आत्मीयता और परोपकार भारतीयता के ऐसे सद्गुण हैं जो विश्वव्यापी हो रहे हैं। दूसरी ओर यूक्रेन और रूस के बीच चल रहे युद्ध को साल-दो साल होने को आया। अभी तक शांति स्थापना छोड़िए। बातचीत की नौबत तक नहीं आई। मनुष्य होने की मूल शर्त भारतीयता के अनुसार विद्या, तप, दान, ज्ञान, चरित्र, गुण धर्म हैं। जिन मनुष्यों के पास इनमें से कुछ नहीं है। वे पृथ्वी पर बोझ हैं और मनुष्य के रूप में पशु ही हैं। जो चलते-फिरते हैं। मूल श्लोक है–

येषां न विद्यां, न तपो न दानम्, ज्ञानं न शीलम् न गुणो न धर्मः।
ते मृत्यु लोके भुविभार भूताः, मनुष्य रूपेण मृगाश्चरंति।।

चलिए कोशिश करें, समझें, अपनाएँ और लागू करें। पृथ्वी को मनुष्यों से भरने का प्रयास करें। कल्याण होगा। आमीन। तथास्तु।

सुरेश आचार्य
प्रधान सम्पादक